रेबीज

यह एक खतरनाक विषाणुजनित प्राणीरूजा (जूनोटिक) रोग है। यह रोग मुख्यतः रेबीजग्रस्त कुत्तों के काटने से फैलता है।

लक्षण :-

कुत्तों में -

- व्यवहार में अचानक बदलाव, मालिक को न पहचानना, आज्ञा न मानना, बेचैन दिखना, व्यर्थ में भौंकना।
- भूख न लगना, बिना मतलब घूमना, अँधेरे में छिपना, काल्पनिक चीजों को काटने दौड़ना, लकड़ी, घास आदि को चबाकर मुँह एवं मसूढ़े में घाव कर लेना।
- जबड़े का नीचे लटक जाना, जीभ बाहर निकालना, आवाज पतली कर्कश, कभी गिरना फिर उठकर गिरना गहरी साँस और 1–3 दिनों में मौत।

गाय एवं भैंसों में -

- अधिक सजगता, उत्तेजित होकर दूसरों को काटना, पेशाब करने की प्रबल इच्छा।
- मोटी आवाज में रंभाना, मुँह से झाग निकलना, बँधे हुये स्थान पर चक्कर काटना एवं अंत में गिरकर पिछला धड़ बेकार हो जाना तथा मृत्यु हो जाना।

इलाज :-

- एक बार रोग का लक्षण प्रकट हो जाने पर इस रोग का कोई ईलाज नही है।

बचाव :-

- रोगग्रस्त कुत्तों द्वारा काटे गए स्थान को दस से पन्द्रह मिनट तक नहाने वाले साबुन के साथ नल के धार वाले पानी से धोना चाहिए। इसके पश्चात काटे हुये स्थान पर एंटीसेप्टिक मलहम लगाना चाहिए।
- यथाशीघ्र पशु चिकित्सक की सलाह पर रेबीज रोधी टीका –0, 3, 7, 14, 30 एवं 90 (ऐच्छिक) वें दिवस को लगाना चाहिए।
- कुत्तों का पशु चिकित्सक के सलाहनुसार ससमय रेबीज रोधी टीका लगाना चाहिए।